ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

खुरपका मुंहपका रोग(F.M.D) के लक्षण एवं बचाव

डॉ. दिलीप कुमार यादव (पीएचडी स्कॉलर, आईसीएआर- एनडीआरआई, करनाल,) एवं
डॉ. विकास सचान (सहायक प्राध्यापक, दुवासु, मथुरा)

खुरपका एवं मुंहपका रोग (Foot and Mouth Disease) एक तेजी से फैलने वाला विषाणु जनित संक्रामक रोग है जो मुख्यतः खुरवाले पशुओं को प्रभावित करता है पालतू पशुओं में इस रोग से गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सूकर, ऊंट इत्यादि प्रभावित होते हैं । इस रोग में पशु को तेज बुखार होता है एवं उसके मुंह एवं खुर एवं थनों पर छाले पड़ जाते है। ये रोग बसंत एवं वर्षा ऋतु में अधिक होता है ।

बीमारी फैलने का ढंग

यह बीमारी मुख्यतः बीमार पशु के सीधे संपर्क में आने से, प्रदूषित दाने चारे व पानी से तथा रोगग्रस्त पशु के स्राव और उत्सर्जन जैसे लार, दूध एवं फफोला के तरल पदार्थ द्धारा फैलती है । पशुशाला में कार्यरत कर्मियों के जूते, चप्पल एवं कपड़े भी विषाणु के स्रोत हो सकते हैं । संदूषित बर्तन, नाद, कृषि उपकरण एवं गाड़ी के टायर आदि भी विषाणु के स्रोत हो सकते हैं । प्रभावित पशुओं के एक जगह से दूसरी जगह परिवहन से भी विषाणु फैलते हैं । अगर कोई रोगग्रस्त पशु उपचार के बाद रोगमुक्त हो जाता है तो भी उसके शरीर के अंदर 6 माह तक विषाणु रहते है जो निष्कासित होते रहते हैं । इनके स्राव के संपर्क में आने पर स्वस्थपशु संक्रमित हो सकते है ।

लक्षण

पशुको 24-48 घंटों तक तेज बुखार(104-106°F) होता है। पशु की भूख कम हो जाती है एवं दुग्ध उत्पादन घट जाता है । पशु के मुंह सेअत्याधिक झागदार एवं रेशेदार लार टपकने लगती है । खुरों के बीच व ऊपर उपस्थित मुलायम त्वचा में छाले पड़ने की वजह से पशु लंगड़ाने लगता है । पशु के मुंह व जीभ में घाव हो जाता है । गाभिन पशुओं में कभी-कभी गर्भपात भी हो जाता है। पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है । जब ये बीमारी छोटे बछड़ों को होती है तो उनमें मृत्युदर भी देखी गयी है ।

खुरों के बीच में घाव (Ulcer)

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उपचार

इस रोग का कोई प्रभावशाली इलाज नहीं है एवं फिर भी रोग के लक्षणों के आधार पर उपचार किया जाता है । पशुपालक को किसी योग्य पशुचिकित्सक से इलाज कराना चाहिए ।

बचाव

खुरपका मुंहपका का प्रभाव होने पर तुरंत स्थानीय पशुचिकित्सक को सूचित करना चाहिए । रोग से प्रभावित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। जहां भी खुरपका मुंहपका का प्रकोप है एवं वहाँ के पशुओं को चरने या बाहर घूमने नहीं देना चाहिए एवं इससे अन्य पशुओं में संक्रमण होने से बचाव होगा । रोगग्रस्त गाय का दूध बछड़े को पीने नहीं देना चाहिए । जहां पशुओं को रखा जाता है एवं वहाँ फिनाइल एवं डेटोल आदि से समुचित साफ़ सफाई करना चाहिए । दूध के बर्तन एवं पशुपालक को स्वयं भी अपने हाथ पैर कीड़े, टोल, साबुन आदि से सफाई करनी चाहिए । हर एक दुधारू पशुको खुरपका मुंहपका रोग का टीका अवश्य लगवाना चाहिए । पहला टीका चार माह की आयु में लगाना चाहिए। पहली बार टीकाकरण के ठीक चार सप्ताह के बाद बूस्टर खुराक देनी चाहिए एवं इसके बाद प्रत्येक छह माह के अंतराल पर टीके की खुराक अवश्य दिलवाना चाहिए । टीकाकरण से पंद्रह दिन पूर्व कृमिनाशक अवश्य देना चाहिए । इससे टीके का प्रभाव उत्तम होगा एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होगी। टीकाकरण के बाद पशुओं को पूर्ण आहार देना चाहिए । जहां तक संभव हो एक ही समय पर सभी पशुओं का टीकाकरण करवाना चाहिए, जिससे समूह प्रतिरक्षा विकसित हो सके । गर्भवती पशुओं को जो तीसरी तिमाही के गर्भावस्था को पार कर चुकीं हों उनका टीकाकरण नहीं करवाना चाहिए । ऐसे पशुओं का प्रसव के बाद ही टीकाकरण करवाना चाहिए ।

किसी भी नए पशु मेले से लौटने वाले मवेशी को कम से कम 2 सप्ताह तक अलग रखना चाहिए और पुराने पशुओं के समूह में सम्मिलित करने से पहले टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए ।

पशुपालक स्थानीय पशुचिकित्सालय से इसकी जानकारी प्राप्तकर पशुओं का टीकाकरण करा सकते है ।